Signature and Name of Invigilator

1. (Signature) _____

   (Name) _____

2. (Signature) _____

   (Name) _____

Roll No. | | | | | | | |

(In figures as per admission card)

Roll No. _____

(In words)

Test Booklet No.

D—0306

PAPER—III

PHILOSOPHY

Time : 2½ hours] **[Maximum Marks : 200**

Number of Pages in this Booklet : **32** Number of Questions in this Booklet : **26**

Instructions for the Candidates

1. Write your roll number in the space provided on the top of this page.
2. Answers to short answer/essay type questions are to be given in the space provided below each question or after the questions in the Test Booklet itself.

   No Additional Sheets are to be used.
3. At the commencement of examination, the question booklet will be given to you. In the first 5 minutes, you are requested to open the booklet and compulsorily examine it as below :
   (i) To have access to the Test Booklet, tear off the paper seal on the edge of this cover page. Do not accept a booklet without sticker-seal and do not accept an open booklet.
   (ii) **Tally the number of pages and number of questions in the booklet with the information printed on the cover page. Faulty booklets due to pages/questions missing or duplicate or not in serial order or any other discrepancy should be got replaced immediately by a correct booklet from the invigilator within the period of 5 minutes. Afterwards, neither the question booklet will be replaced nor any extra time will be given.**
4. Read instructions given inside carefully.
5. One page is attached for Rough Work at the end of the booklet before the Evaluation Sheet.
6. If you write your name or put any mark on any part of the Answer Sheet, except for the space allotted for the relevant entries, which may disclose your identity, you will render yourself liable to disqualification.
7. You have to return the Test booklet to the invigilators at the end of the examination compulsorily and must not carry it with you outside the Examination Hall.
8. **Use only Blue/Black Ball point pen.**
9. **Use of any calculator or log table etc. is prohibited.**
10. **There is NO negative marking.**

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. पहले पृष्ठ के ऊपर नियत स्थान पर अपना रोल नज़्बर लिखिए।
2. लघु प्रश्न तथा निबंध प्रकार के प्रश्नों के उज़र, प्रत्येक प्रश्न के नीचे या प्रश्नों के बाद में दिये हुये रिज़्त स्थान पर ही लिखिये।

   इसके लिए कोई अतिरिज़्त कागज का उपयोग नहीं करना है।
3. परीक्षा प्रारज़्भ होने पर, प्रश्न-पुस्तिका आपको दे दी जायेगी। पहले पाँच मिनट आपको प्रश्न-पुस्तिका खोलने तथा उसकी निज़्नलिखित जाँच के लिए दिये जायेंगे जिसकी जाँच आपको अवश्य करनी है :
   (i) प्रश्न-पुस्तिका खोलने के लिए उसके कवर पेज पर लगी सील को फाड़ लें। खुली हुई या बिना स्टीकर-सील की पुस्तिका स्वीकार न करें।
   (ii) **कवर पृष्ठ पर छपे निर्देशानुसार प्रश्न-पुस्तिका के पृष्ठ तथा प्रश्नों की संज़्या को अच्छी तरह चैक कर लें कि ये पूरे हैं। दोषपूर्ण पुस्तिका जिनमें पृष्ठ / प्रश्न कम हों या दुबारा आ गये हों या सीरियल में न हों अर्थात किसी भी प्रकार की त्रुटिपूर्ण पुस्तिका स्वीकार न करें तथा उसी समय उसे लौटाकर उसके स्थान पर दूसरी सही प्रश्न-पुस्तिका ले ले। इसके लिए आपको पाँच मिनट दिये जायेंगे। उसके बाद न तो आपकी प्रश्न-पुस्तिका वापस ली जायेगी और न ही आपको अतिरिक्त समय दिया जायेगा।**
4. अन्दर दिये गये निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
5. उज़र-पुस्तिका के अन्त में कच्चा काम (Rough Work) करने के लिए मूल्यांकन शीट से पहले एक पृष्ठ दिया हुआ है।
6. यदि आप उज़र-पुस्तिका पर अपना नाम या ऐसा कोई भी निशान जिससे आपकी पहचान हो सके, किसी भी भाग पर दर्शाते या अंकित करते हैं तो परीक्षा के लिये अयोग्य घोषित कर दिये जायेंगे।
7. आपको परीक्षा समाप्त होने पर उज़र-पुस्तिका निरीक्षक महोदय को लौटाना आवश्यक है और इसे परीक्षा समाप्ति के बाद अपने साथ परीक्षा भवन से बाहर न लेकर जायें।
8. **केवल नीले / काले बाल प्वाईंट पैन का ही इस्तेमाल करें।**
9. **किसी भी प्रकार का संगणक (कैलकुलेटर) या लाग टेबल आदि का प्रयोग वर्जित है।**
10. **गलत उज़र के लिए अंक नहीं काटे जायेंगे।**

PHILOSOPHY

दर्शनशास्त्र

PAPER—III

प्रश्न-पत्र—III

NOTE: This paper is of two hundred (200) marks containing four (4) sections. Candidates are required to attempt the questions contained in these sections according to the detailed instructions given therein.

नोट : यह प्रश्नपत्र दो सौ (200) अंकों का है एवं इसमें चार (4) खंड है। अज्यर्थियों को इन में समाहित प्रश्नों का उज़र अलग दिये गये विस्तृत निर्देशों के अनुसार देना है।

SECTION - I

खण्ड—I

Note : This section contains five (5) questions based on the following paragraph. Each question should be answered in about thirty (30) words and each carries five (5) marks.

(5x5=25 marks)

नोट : इस खंड में निम्नलिखित अनुच्छेद पर आधारित पाँच (5) प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग तीस (30) शब्दों में अपेक्षित है। प्रत्येक प्रश्न पाँच (5) अंकों का है।

(5x5=25 अंक)

Sir Aurobindo on Reality - Sachidānanda - The Life Divine.

"To understand the nature of the reality, it is essential to consider the levels or the cords of Being. They are : Existence, Consciousness-force, Bliss, Supermind, Mind, Psyche, Life and Matter."

"Mind is a subordinating power of supermind, life is a subordinate power of the energy aspect of reality-of consciousness-force. Matter is the form of substance of being, which the existence of Sachidānanda assumes when it subjects itself to this phenomenal action of its own consciousness-force. The Divine descends from pure existence through the play of consciousness-force and Bliss and the creative medium of supermind into cosmic Being, we descend from. Matter through a developing life, soul and mind and the illuminating medium of supermind towards the divine being".

श्री अरविन्द

परम सज़ा-सच्चिदानन्द

'दिव्य जीवन' से

''सज़ा के स्वरूप को समझने के लिए, सज़ा के सूत्रों या स्तरों को समझना आवश्यक है। ये हैं : अस्तित्व, चित-शज़्ति, आनन्द, अतिमन, मन, चैत्य, प्राण और जड़-तत्व।''

''मन, अतिमन की अधीनस्थ शज़्ति है, जीवन (प्राण) सज़ा की चित्-शज़्ति के ऊर्जा पक्ष की अधीनस्थ शज़्ति है, जड़-तत्व सत् के द्रव्य का रूप है जिसे सच्चिदानन्द का अस्तित्व तब ग्रहण करता है जब वह अपने-आपको अपनी इस चित्-शज़्ति के जागतिक कार्य का विषय बनाता है। भागवत सज़ा, शुद्ध सत् से चित्-शज़्ति की क्रीड़ा के द्वारा आनन्द और सर्जनात्मक अतिमन के माध्यम से होते हुए वैश्व सज़ा में नीचे अवतरित होती है; हम जड़-तत्व से विकसनशील जीवन, आत्मा और मन तथा प्रकाशित अतिमन के माध्यम से होते हुए भागवत् सज़ा में ऊपर आरोहण करते है।''

What is Sri Aurobindo's conception of :
श्री अरविन्द की इस विषय में अवधारणा ज़्या है :

1. Sachidānanda.
सच्चिदानन्द

2. Evolution and Involution.
विवर्तन (विकास) और निवर्तन (प्रतिविकास).

3. Mind.

मन

4. Supermind.

अतिमन

5. "Supra-mental manifestation of a divine life here upon earth".

पृथ्वी पर दिव्य जीवन की अतिमानसिक अभिव्यज्ञि।

SECTION - II

खण्ड—II

Note : This section contains fifteen (15) questions each to be answered in about thirty (30) words. Each question carries five (5) marks.

(5x15=75 marks)

नोट : इस खंड में पाँच-पाँच (5-5) अंकों के पंद्रह (15) प्रश्न हैं। प्रत्येक प्रश्न का उज़र लगभग तीस (30) शज़्दों में अपेक्षित है। प्रत्येक प्रश्न पाँच (5) अंकों का है।

(5x15=75 अंक)

6. Distinguish between vyāvahārika and pāramārthika sattā.
व्यावहारिक और पारमार्थिक सज़ा में भेद कीजिए।

7. State the problem of personal identity.
वैयज़्तिक पहचान की समस्या का वर्णन कीजिए।

8. Explain Prāmānyavāda.
प्रामाण्यवाद को स्पष्ट कीजिए।

9. Examine briefly any one of the theories of error.
भ्रान्ति के सिद्धान्तों में से किसी एक सिद्धान्त की संक्षेप में व्याज़्या कीजिए।

10. Define vyāpti and examine its nature.

व्याप्ति की परिभाषा दीजिए तथा इसकी व्याख्या कीजिए।

11. Explain the concept of ṟṇa̱ (duty) according to vedic thought.

वैदिक अवधारणा में ऋण सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए।

12. What is meant by Svadharma ? Explain.
स्वधर्म से ज़्या अभिप्राय है ? स्पष्ट कीजिए।

13. Distinguish between the terms 'duty' and 'obligation'.
कर्ज़व्य और बाध्यता के भेद को स्पष्ट कीजिए।

14. Analyse briefly the Reformative theory of punishment.
दण्ड के सुधारवादी सिद्धान्त का संक्षेप में विश्लेषण कीजिए।

15. Define Intuitionism. Explain its salient aspects.
अन्त:ज्ञानवाद की परिभाषा दीजिए। इसके प्रमुख पक्षों का विश्लेषण कीजिए।

16. State Bentham's views on Utilitarianism.

उपयोगितावाद के सज़्बन्ध में बैंथम के विचारों को लिखिए।

17. Distinguish between a proposition and a sentence.

संवाज़्य (प्रोपोजीशन) तथा सूज़्ति (सेंटेंस) में ज़्या अन्तर है, लिखिए।

18. Explain briefly the theory of quantification.
अनुमान सिद्धान्त को संक्षेप में स्पष्ट कीजिए।

19. What is meant by Feminism ? Explain.
स्त्रीवाद से ज़्या अभिप्राय है ? स्पष्ट कीजिए।

20. What is the purpose of axiomatic method ? Explain the various steps you would take in setting up any axiomatic system.

स्वयं सिद्ध विधि के ज़्या उद्देश्य हैं? किसी स्वयं सिद्ध प्रणाली की स्थापना में जिन भिन्न भिन्न उपायों को अपनायेंगे, उनकी व्याज़्या कीजिए।

SECTION - III

खण्ड—III

Note : This section contains five (5) questions from each of the electives / specialisations. The candidate has to choose only one elective / specialisation and answer all the five questions from it. Each question carries twelve (12) marks and is to be answered in about two hundred (200) words.

(12x5=60 marks)

नोट : इस खंड में प्रत्येक ऐच्छिक इकाई/विशेषज्ञता से पाँच (5) प्रश्न हैं। अज़्यर्थी को केवल एक ऐच्छिक इकाई/विशेषज्ञता को चुनकर उसी में से पाँचो प्रश्नों का उज़र देना है। प्रत्येक प्रश्न बारह (12) अंकों का है व उसका उज़र लगभग दो सौ (200) शज़्दों में अपेक्षित है।

(12x5=60 अंक)

Elective - I
विकल्प—I

21. Explain briefly the significance of the doctrine of incarnation in the Indian religious tradition.

भारतीय धार्मिक परज़्परा में अवतार के सिद्धान्त के महत्व की संक्षिप्त व्याज़्या कीजिए।

22. Examine the nature of inter-religious dialogue for promoting religious harmony.

धार्मिक सामंजस्य को बढ़ावा देने के लिए अन्तर-धार्मिक संवाद के स्वरूप की परीक्षा कीजिए।

23. Bring out the salient aspects of Tribal religion in India.

भारत में आदिम जाति-धर्म के प्रमुख पक्षों को बताइए।

24. State and examine the destiny of man according to Christianity.

ईसाई धर्म के अनुसार मनुष्य की भवितव्यता का विवेचन और परीक्षा कीजिए।

25. State and examine the role of faith in the Indian religious tradition.

भारतीय धार्मिक परज़्परा में विश्वास की भूमिका का विवेचन और परीक्षा कीजिए।

OR / अथवा

Elective - II
विकल्प—II

21. Examine Frege's distinction between sense and reference.

फ्रेगे कृत, प्रयुज़्त शज़्द (सेन्स) तथा शज़्द-निर्देश (रेफरेन्स) के, भेद की परीक्षा कीजिए।

22. Bring out the relation between meaning and truth.

अर्थ और सत्य के मध्य सज़्बन्ध का विवेचन कीजिए।

23. Analyse Quine's critique of linguistic theory of necessary propositions.

क्वाइन के आलोचनात्मक भाषा-विज्ञान (क्रिटीक ऑफ लिंग्विस्टिक) के अनिवार्य तर्क-वाज़्यों के सिद्धान्त का विश्लेषण कीजिए।

24. Explain the terms 'Meaning and use' according to the Pragmatics.

अर्थक्रियावादियों के अनुसार 'अर्थ और उपयोग' के पदों की व्याज़्या कीजिए।

25. State the conception of philosphy according to the linguistic thinkers.

भाषा विज्ञानी चिन्तकों के अनुसार दर्शन की अवधारणा का वर्णन कीजिए।

OR / अथवा

Elective - III
विकल्प—III

21. Distinguish between Phenomenology and solipsicism bringing out their salient aspects.

संवृज़िशास्त्र (फिनामेनालॉजी) और अहंमात्रतावाद के भेद को स्पष्ट करते हुए उनके प्रमुख पक्षों का उल्लेख कीजिए।

22. Explain C.S. Peirce's contribution to phenomenology.

संवृज़िशास्त्र (फिनामेनालॉजी) के लिए सी.एस. पियर्स के योगदान की व्याज़्या कीजिए।

23. Examine in detail Sartre's phenomenological ontology.

सार्त्र के संवृज़िशास्त्रीय तत्वशास्त्र की विस्तार से परीक्षा कीजिए।

24. Analyse the fundamental concepts of phenomenology of Edmund Husserl.
एडमण्ड हुसरल के संवृज़िशास्त्र की आधारभूत अवधारणाओं का विश्लेषण कीजिए।

25. Analyse any one of the hermeneutical thinkers contribution to philosophy.
दर्शनशास्त्र में शास्त्रार्थमीमांसा के चिन्तकों में से किसी एक के योगदान का विश्लेषण कीजिए।

OR / अथवा

Elective - IV

विकल्प—IV

21. Explain the nature and validity of from the different viewjoints in Indian philosophy.
भारतीय दर्शन में विभिन्न दृष्टियों से शज़्द प्रमाण के स्वरूप और वैधता की व्याज़्या कीजिए।

22. Analyse briefly Ramanuja's interpretation of mahavakyas.
रामानुज द्वारा की गयी महावाज़्यों की व्याज़्या का संक्षिप्त विश्लेषण कीजिए।

23. Outline the fundamental aspects of Vallabha's philosophy.
वल्लभ के दर्शन के आधारभूत पक्षों का विवेचन कीजिए।

24. State Madhva's theory of Knowledge.
मध्व के ज्ञान के सिद्धान्त का वर्णन कीजिए।

25. What according to pratibimbavāda is the nature of jīvā and Iśvara ? Discuss.
प्रतिबिज़्बवाद के अनुसार जीव और ईश्वर का स्वरुप ज़्या है? विचार कीजिए।

OR / अथवा

Elective - V

विकल्प—V

21. Outline the salient aspects of Gandhian philosophy with special reference to self, world and God.
आत्मा, जगत् और ईश्वर के विशेष सन्दर्भ में गाँधी दर्शन के प्रमुख पक्षों पर विचार कीजिए।

22. Is there continuity or break by the post-Gandhians in their approach to establish a stateless society.
उज़र–गाँधीवादियों के राज्यविहिन समाज की स्थापना के प्रयास में सातत्यता है या अन्तराल है।

23. Analyse the cardinal virtues required by a satyagrahi.
सत्याग्रही के लिए आवश्यक प्रमुख गुणों का विश्लेषण कीजिए।

24. What are the basic moral foundations of good life according to Gandhi ?

गाँधी के अनुसार शुभ जीवन के मूलभूत नैतिक आधार ज़्या हैं ?

25. Evaluate Gandhi's ideas and ideals to uphold and practice the principle of sarvadharma samabhava in the present-day society.

वर्तमान समाज में सर्वधर्म समभाव के सिद्धान्त को ग्रहण करने और उसका अज़्यास करने के लिए गाँधी के विचारों और आदर्शों का मूल्यांकन कीजिए।

SECTION - IV

खण्ड—IV

Note : This section consists of one essay type question of forty (40) marks to be answered in about one thousand (1000) words on any of the following topics. This question carries 40 marks.

(40x1=40 marks)

नोट : इस खंड में एक चालीस (40) अंको का निबन्धात्मक प्रश्न है जिसका उज़र निज़्नलिखित विषयों में से केवल एक पर, लगभग एक हजार (1000) शज़्दों में अपेक्षित है।

(40x1=40 अंक)

26. Analyse the Gandhian concept of satyāgraha and evaluate its application to resolve socio-political conflicts in India.

गाँधी के सत्याग्रह की अवधारणा का विश्लेषण कीजिए और बतलाइये कि यह भारत में किस प्रकार सामाजिक एवं राजनीतिक संघर्षों को समाप्त करने में सहायक है।

OR / अथवा

Give an account of the nature of Brahman according to Sankara. How does it differ from the interpretations of Rāmānujā and Madhva ? Analyse critically their viewpoints.

शंकर के अनुसार ब्रह्म के स्वरूप का वर्णन कीजिए। यह रामानुज और मध्व की व्याज़्याओं से किस प्रकार भिन्न है ? उनके दृष्टिकोणों का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

OR / अथवा

Can there be rights without duties ? How would you relate the two in the context of Indian society with secular ideology.

ज़्या अधिकार, बिना कर्ज़व्यों के हो सकते हैं ? आप इन दोनों को भारतीय समाज की धर्म निरपेक्षतावादी विचारधारा से किस प्रकार सज़्बन्धित करेंगे ?

OR / अथवा

Explain the verification theory and show whether it leads to the elimination of metaphysics.

सत्यापन सिद्धान्त की व्याज़्या कीजिए और यह दिखाइये कि ज़्या यह सिद्धान्त तत्वमीमांसा का खण्डन करता है ?

OR / अथवा

Mention the various arguments for the existence of God and critically explain any one of them.

ईश्वर के अस्तित्व के विभिन्न प्रमाणों को उधृत कीजिए और उनमें से किसी एक की आलोचनात्मक व्याज़्या कीजिए।

FOR OFFICE USE ONLY							
Marks Obtained							
Question Number	Marks Obtained	Question Number	Marks Obtained	Question Number	Marks Obtained	Question Number	Marks Obtained
1		26		51		76	
2		27		52		77	
3		28		53		78	
4		29		54		79	
5		30		55		80	
6		31		56		81	
7		32		57		82	
8		33		58		83	
9		34		59		84	
10		35		60		85	
11		36		61		86	
12		37		62		87	
13		38		63		88	
14		39		64		89	
15		40		65		90	
16		41		66		91	
17		42		67		92	
18		43		68		93	
19		44		69		94	
20		45		70		95	
21		46		71		96	
22		47		72		97	
23		48		73		98	
24		49		74		99	
25		50		75		100	

Total Marks Obtained (in words) .....

(in figures) .....

Signature & Name of the Coordinator .....

(Evaluation) Date .....